रक्षाबंधन

भारत देश विश्व गुरु होने के कारण यहाँ के प्रत्येक रस्म-रिवाज और पर्व में मनुष्य को सशक्त करने तथा एक ऐसा समाज बनाने के प्रयास का भाव होता है जहाँ मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से खुशहाल और सुन्दर जीवन बना सके। इन पर्वों और रीति, रस्म, रिवाजों में रक्षाबन्धन का पर्व धागे का है, परंतु बहुत शक्तिशाली है।

रक्षाबंधन का पर्व श्रावण मास में पूर्णिमा के समय मनाया जाता है। पूर्णिमा अर्थात् चन्द्रमा का सम्पूर्ण रूप। श्रावण मास को वैसे भी परमात्मा शिव का मास मानते हैं। जिसमें भगवान भोलेनाथ की विभिन्न रूपों में पूजा की जाती है। वैसे तो यह पर्व आज के संदर्भ में भाई-बहन तक ही सीमित हो गया है। परंतु यदि इसके अतीत पर नज़र डाली जाए तो इसका प्रारंभ भाई-बहन से न होकर सर्व मनुष्यात्माओं को आसुरी वृत्तियों से मुक्त कराने के प्रतीक के रूप में होता है। वास्तव में मनुष्य को विकारों, आसुरी संस्कारों तथा व्यभिचारों से मुक्त होने के लिए पवित्रता के बल की आवश्यकता होती है। जब मनुष्य पवित्रता को छोड़ अपवित्रता की राह पर चल पड़ता है तब उसे अनेक कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आत्मा की असली ताकत उसकी पवित्रता है इसलिए पवित्रता के सागर परमपिता परमात्मा शिव के मास में इस पर्व की महत्ता का वर्णन है।

राखी के संदर्भ में बात की जाये तो आज इसका रूप बदलकर पाश्चात्य देशों के प्रभाव और संस्कृति के कारण केवल परंपरा के रूप में मनाये जाने तक रह गया है। तरह-तरह की विभिन्न प्रकार की सजी-सजाई फैशनेबल राखियों को भाई की कलाई में बांधकर अपनी परंपरा पूरी कर लेते हैं। जबकि प्रारंभ में जब इसकी शुरुआत हुई तो जब पुरुष युद्धभूमि में जाते थे तब उनकी धर्मपत्नियां रक्षाबंधन बांधकर तथा माथे पर तिलक लगाकर उनके विजयी होने की कामना करती थीं। इसके बाद ब्राह्मण भी केवल एक पीला धागा अपने यजमानों को बांधते थे जिसे रक्षासूत्र कहा जाता था। वह अब भी कहीं-कहीं प्रचलित है। जब मनुष्य मंदिरों में जाते हैं या कोई अनुष्ठान कराते हैं तब ब्राह्मण अथवा पुजारी हाथ में रक्षासूत्र बांधता है तथा आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा रक्षा करने की कामना करता है। यदि यह रक्षाबंधन केवल भाई-बहनों तक ही सीमित था तब असुरों और देवताओं के युद्ध में इन्द्राणी ने इन्द्र को रक्षाबंधन क्यों बांधा था जबकि वे तो पति-पत्नी थे। अथवा ब्राह्मण यजमानों को रक्षासूत्र क्यों बांधते थे? इसके बारे में आज प्रत्येक व्यक्ति को सोचने की आवश्कता है।

रक्षाबंधन की आध्यात्मिक व्याख्या:

रक्षाबंधन का अर्थ ही होता है रक्षा के लिए बंधन। हालांकि बंधन किसी को भी प्रिय नहीं होता है। परंतु इसका अर्थ है आसुरी प्रवृत्तियों से रक्षा के लिए मर्यादाओं के बंधन में बंधना, जिसके कारण हमें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वास्तव में यह बंधन नहीं स्वतंत्रता है क्योंकि जो व्यक्ति आसुरी शक्तियों से मुक्त है वह इस दुनिया में सबसे स्वतंत्र है। मनुष्यों की आसुरी शक्तियों से रक्षा करना तथा दैवी शक्तियों का आह्वान करना ही इस रक्षाबंधन का उद्देश्य है। रक्षाबंधन का प्रारंभ यदि ईश्वरीय संदर्भ में देखा जाए तो श्रावण मास परमात्मा शिव का मास माना जाता है। इसका अर्थ यही है कि स्वयं परमात्मा ने इसका -शेष पेज 5 पर

श्रीकृष्ण कब आते हैं?

आपने ऐसे भी चित्र देखे होंगे जिनमें कि श्रीकृष्ण को सागर में तैरते हुए पीपल के पत्ते पर चित्रित किया गया होता है। इस विषय में यह भी उल्लेख है कि ''सृष्टि के आदि काल में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर देखा गया।'' वास्तव में उस चित्र का भी भाव यही है कि श्रीकृष्ण ने सतयुग के आरंभ में जन्म लिया था। आप जानते हैं कि संसार को 'सागर' भी कहा जाता है। इस संसार रूपी सागर अर्थात् असीम लोक में मनुष्य सृष्टि मानो पीपल (अश्वत्थ) का एक वृक्ष है। ब्रह्मा और सरस्वती उसके मूल हैं और श्रीकृष्ण उसके पत्ते पर तैर रहे हैं अर्थात् इससे अलिप्त और न्यारे होकर उन्होंने इसमें जीवन व्यतीत किया। वे इस सृष्टि के सबसे पहले पत्ते हैं अर्थात् उनका जन्म सृष्टि के प्रारंभ में ही हुआ। ''अर्थात् श्रीकृष्ण को सृष्टि के आरंभ में पीपल के पत्ते पर तैरते हुए देखा गया''– इस कथन का अर्थ यह हुआ कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि काल में हुए।

जीवनमुक्त होने के कारण श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ

श्रीकृष्ण जीवनमुक्त थे। उन्हें जीवनबन्ध अवस्था वाला तो कोई भी नहीं मानेगा। कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि श्रीकृष्ण पर पूर्व जन्मों के किन्हीं विकर्मों का बोझ था अथवा कि उनमें मनसा, वाचा या कर्मणा किसी प्रकार की कुछ भी अपवित्रता थी। बल्कि सभी यह कहेंगे कि श्रीकृष्ण मानसिक विकारों तथा विकर्मों से पूर्णत: मुक्त थे और श्रेष्ठ भाग्य वाले थे अर्थात् उन्हें पवित्रता (धर्म), धन-धान्य (अर्थ), दीर्घ आयु, निरोगी काया आदि सर्व सुख तथा विकर्मों के बन्धन से मुक्ति पूर्णत: प्राप्त थी। वे सतोगुण की प्रधानता की भी पराकाष्ठा को प्राप्त थे। अत: उस सर्वोच्च प्रारब्ध को भोगने के लिए उनका जन्म ऐसे ही लोक में होना आवश्यक था जहाँ कभी भी अधर्म (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार), दु:ख (गर्भ-जेल, रोग, अकाले मृत्यु, निर्धनता आदि), और अशान्ति (लड़ाई, झगड़ा, मतभेद, द्वेष, कलह आदि), प्राकृतिक आपदाएँ (अति वर्षा, भूकम्प आदि) तथा तमोगुण आदि का नाम-निशान भी न होता हो, जहाँ कानों में कोई भी अपशब्द या अशुभ समाचार का शब्द न पड़े, जहाँ न शोक हो, न शोक की कोई सूचना और जहाँ कोई भी दुर्व्यवहार, पापाचार, अत्याचार, विकार इत्यादि दिखाई न देते हों। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अत: श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ। इसलिए शास्त्रवादी लोग भी कहते हैं कि श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण ने सृष्टि के आदि में राजा पृथु के रूप में जन्म लिया और उसने पृथ्वी रूपी गौ को दुहा और इससे सभी वैभव तथा पदार्थ प्राप्त किये। कहने का भाव यह है कि उन्होंने सारी पृथ्वी पर अटल-अखण्ड और निर्विघ्न राज्य किया तथा सर्वोत्तम प्रारब्ध को भोगा था।

'क्षीर सागर के अर्थ के स्पष्टीकरण से भी यही सत्यता सिद्ध है'

आपने देखा होगा कि भारत में ऐसे भी चित्र उपलब्ध हैं और ऐसा भी वर्णन तथा उल्लेख मिलता है जिनमें कि श्रीनारायण, को क्षीर सागर में शेषनाग पर लेटा हुआ अंकित किया गया होता है। इस चित्र का भी अर्थ यही होता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि में हुए थे क्योंकि वास्तव में दूध को अति पवित्र वस्तु माना गया है और दूध खुशहाली तथा सम्पन्नता का भी प्रतीक है और 'सागर' शब्द बहुतायत का भी वाचक है और पवित्रता तथा धन-धान्य की बहुतायत तो सतयुग में ही थी। आप जानते हैं कि जब कोई वस्तु अधिक होती है तो मुहावरे में कहा जाता है कि फलां वस्तु का तो यहाँ सागर है। अत: 'क्षीर सागर' या 'दूध का सागर' सम्पूर्ण पवित्रता तथा सुख-समृद्धि का बोधक है और सागर में शेषनाग पर निश्चिंत भाव से लेटना, चित्रकार की भाषा में इस सत्यता का संकेतक है कि श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण सतयुग के सुखकाल में हुए और उनका राज्य निर्विघ्न, निष्कंटक और अति सुखकारी था। उसमें कोई भी वैरी, कोई भी शत्रु या कोई हिंसक न था। स्पष्ट है कि इन सभी रहस्यों को जानते हुए भी यह कहना कि ''श्री राधे और श्री कृष्ण, जो स्वयंवर के बाद 'श्रीलक्ष्मी' और 'श्रीनारायण' कहलाये, द्वापरयुग में हुए'' भूल है और श्रीकृष्ण की ग्लानि करने के तुल्य है।

हैदराबाद। आ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडू को अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय,माउण्ट आबू तथा अन्य।

नवापारा-राजिम। कृषिमंत्री बृजमोहन जी ब्र.कु. नारायण को मोमेन्टो प्रदान करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. पुष्पा।

हरिद्वार। 'अलविदा तनाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए महन्त सुन्दरदास जी महाराज,मानस मंदिर,कनखल, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

भैरहवा-नेपाल। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भूपेन्द्र। साथ हैं सभासद् एवं पूर्व मंत्री दीपक वोहरा, पूर्व मेयर सागर प्रताप राणा, ब्र.कु. शान्ति तथा अन्य।

गोपाल नगर-कटनी(म.प्र.)। 'नारी सुरक्षा अपनी सुरक्षा' अभियान के उद्घाटन अवसर पर नारियों के सम्मान के पश्चात् अपने विचार व्यक्त करते हुए सरावगी कॉलेज की प्रिसीपल पाण्डे बहन। साथ हैं वाणिज्य कर अधिकारी, महापौर रुक्मणि बर्मन तथा ब्र.कु. भगवती।

मनाली-हि.प्र.। 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' राष्ट्रीय अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक गोविंद सिंह ठाकुर, तहसीलदार पद्मा शेरिंग, ब्र.कु. संध्या, अभियान प्रभारी डॉ. सचिन, डॉ. डोनिका, डॉ. पुष्पा पाण्डेय व अन्य।